सनातन भारत

जागृत भारत

विपुल भौतिक समृद्धि उच्च तकनीकी दक्षताएँ

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

Centre for Policy Studies WWW.CPSINDIA.ORG

विपुल कृषि उपजकी भूमि

भारतभूमिको विपुल प्राकृतिक उर्वरता, प्रचुर जल एवं असीम धूप प्राप्त हुई है। भारतके लोगोंने प्रकृतिकी इस विशिष्ट अनुकम्पाको कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया है। अत्यन्त प्राचीन कालसे ही वे इस प्राकृतिक प्राचुर्यका समुचित नियोजन करनेके लिये कृषिके विभिन्न क्षेत्रोंमें उच्चतम दक्षताएँ विकसित करनेको कृतसंकल्प रहे हैं।

चौथी शताब्दी ईसापूर्वके यूनानी योद्धा सिकन्दरसे लेकर अठारहवीं ईसवी शताब्दीके प्रायः अन्तके यूरोपीयोंतक भारतमें आनेवाले प्रायः सब पर्यवेक्षक भारतीय कृषकोंकी उपजके बाहुल्यको देखकर स्तब्ध होते रहे हैं। हल चलाना, खाद देना, सिञ्चाई करना, बीजोंका चयन, शस्योंका आवर्तन, भूमि परती रखना जैसी कृषि-सम्बन्धी समस्त विधाओंमें भारतीय कृषकोंकी परिष्कृत तकनीकोंसे वे प्रभावित हुए हैं। कृषिके विविध कार्योंके लिये भारतके विभिन्न भागोंमें विकसित सादे-सरल तथापि पूर्णतः कार्यक्षम उपकरणोंने उन्हें विस्मित किया है।

उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोत प्रमाणित करते हैं कि प्रायः अर्वाचीन कालतक भारतीय विश्वके सर्वोत्तम कृषक रहे हैं। विभिन्न कालोंके शिलालेखों एवं बाह्य पर्यवेक्षकोंके वृत्तान्तोंमें भारतके प्रायः सब भागोंमें आजकी तकनीकोंसे सम्भव सर्वाधिक कृषि-उपजके समकक्ष उपज होनेके उल्लेख मिलते हैं।

भारतभूमिकी सहज उर्वरताको प्रचुर शस्योंमें फलीभूत करनेकी भारतीय कृषकोंकी इस क्षमतासे ही भारतभूमि शस्यश्यामला बन पाई है। उपनिषद् की शिक्षा है – *अन्नं बहु कुर्वीत। तद्व्रतम्।* अन्नबाहुल्यका सम्पादन करो, यह व्रत है। भारतने अत्यन्त निष्ठापूर्वक इस व्रतका निर्वाह किया है।

विश्वका सबसे बड़ा कृषिक्षेत्र

काल	क्षेत्र	स्रोत/सन्दर्भ	प्रतिहेक्टेयर वार्षिक उत्पादन
९००-१२००	तञ्जावूर	शिलालेख	१५-१८ टन प्रतिहेक्टेयर धान
११००	दक्षिण आर्काट	शिलालेख	१४.५ टन प्रतिहेक्टेयर धान
१३२५	रामनाथपुरम्	शिलालेख	२०.० टन प्रतिहेक्टेयर धान
१८०७	कोयम्बत्तूर	यूरोपीय पर्यवेक्षक	१३.० टन प्रतिहेक्टेयर धान
१८०३	प्रयाग	यूरोपीय पर्यवेक्षक	७.५ टन प्रतिहेक्टेयर गेहूँ और एक अन्य शस्य
१७७०	चिन्नम्बेडु (चेङ्गलपट्टु)	ब्रिटिश सर्वेक्षण	९.० टन प्रतिहेक्टेयर धान
१९९३	लुधियाना (पंजाब)	भारत सरकार	४.३ टन प्रतिहेक्टेयर गेहूँ और ५.५ टन प्रतिहेक्टेयर धान

भारतके कृषिवैभवपर विश्व विस्मित होता रहा है

प्रथम शताब्दी ईसापूर्वके रोमन आख्याता डियोडोरस सिक्युलस भारतके विषयमें लिखते हैं–

भारतमें अनेक विशाल पर्वत हैं जो सब प्रकारके फलवान् वृक्षोंसे आच्छादित रहते हैं। वहाँ अपूर्व सौंदर्यसे युक्त अत्यधिक उर्वर विस्तृत मैदान हैं, जिनमें अनेक नदियाँ प्रवाहित होती हैं। भारतकी अधिकतर भूमि भलीभाँति सिञ्चित है और उसपर प्रतिवर्ष दो शस्य फलित होते हैं।

अन्य अनाजोंके अतिरिक्त भारतमें सब स्थानोंपर मोटे अनाज भी उगते हैं। स्थान-स्थानपर बहती जलधाराओंसे इन शस्योंका सिञ्चन होता है। वहाँ बढ़िया दालें और धान भी प्रचुर मात्रामें उगते हैं। भोजनोपयोगी अनेक अन्य पौधे होते हैं। इनमें से अधिकतर मात्र भारतमें ही पाये जाते हैं। भारतभूमिपर पशुओंके पोषणके लिये उपयोगी अनेक प्रकारके फल भी प्राप्त होते हैं।

अतः यह प्रामाणिक रूपसे कहा जा सकता है कि भारतवर्षमें कभी दुर्भिक्ष नहीं पड़ा और पौष्टिक भोजनका सार्वजनिक अभाव वहाँ कभी नहीं हुआ।

चौदहवीं ईसवी शताब्दीके अफ्रीकी इब्न-बटूटा भारतप्रवासके अपने विवरणोंमें लिखते हैं–

शरद्‌की शस्य एकत्र करनेके तुरन्त पश्चात् वे उसी भूमिपर वसन्तके अनाजोंकी बुवाई करने लगते हैं। क्योंकि उनकी भूमि उत्कृष्ट है और वहाँकी मिट्टी अत्यन्त उर्वर है। धानके तो वे एक वर्षमें तीन शस्य उगा लेते हैं।

भारतके कृषिवैभवपर विश्व विस्मित होता रहा है

सत्रहवीं ईसवी शताब्दीके फ्रांसॉय बर्नियर बंगालके सन्दर्भमें लिखते हैं–

सब कालोंके अध्येता मिस्रको विश्वकी श्रेष्ठतम एवं सर्वाधिक उर्वरा भूमिका गौरव देते रहे हैं। हमारे आधुनिक लेखक भी ऐसा मानते हैं कि मिस्र जैसी प्राकृतिक सम्पदासे सम्पन्न कोई अन्य भूमि नहीं है। बंगालकी अपनी दो यात्राओंमें मैं उस देशके विषयमें जो जान पाया हूँ उसके आधारपर मेरा तो यही मत बना है कि मिस्रको दिये जानेवाले गौरवका वास्तविक अधिकारी बंगाल है। बंगालमें धानकी ऐसी प्रचुर उपज होती है कि उससे न केवल पड़ोसी प्रदेशोंकी अपितु सुदूर राज्योंकी आवश्यकताओंका संभरण भी होता है। बंगालका धान गङ्गापर धारासे विपरीत दिशामें पटनातक ले जाया जाता है। समुद्रमार्गसे इसे चोलमण्डल तटके मछलीपत्तनम् एवं अन्य अनेक पत्तनोंतक पहुँचाया जाता है। अनेक विदेशी राज्योंमें भी प्रधानतः श्रीलंका एवं मालदीव द्वीपोंमें यहाँका धान पहुँचता है। इसी प्रकार बंगालमें चीनीकी भी बहुलता है। यहाँकी चीनी गोलकोण्डा एवं कर्नाटक प्रदेशोंतक जाती है। ...यहाँके सामान्य लोगोंके मुख्य भोजनमें घी-चावलके अतिरिक्त तीन-चार प्रकारके शाक आते हैं। ये शाक तो यहाँ कौड़ियोंके भाव मिल जाते हैं।